प्रश्न 1. प्रबन्ध विज्ञान भी है एवं कला भी, समझाइए।

उत्तर—प्रबन्ध विज्ञान है अथवा कला यह निश्चित करने से पहले कला एवं विज्ञान का अलग-अलग अध्ययन करना जरूरी है। इन्हीं अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रबन्ध विज्ञान है या कला।

Scanned with CamScanner

प्रबन्ध कला के रूप में—प्रबन्ध को सामान्यतया कला के रूप में समझा जाता है, क्योंकि कला का अर्थ किसी कार्य को करने अथवा किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ज्ञान एवं कुशलता का उपयोग करना है। कला ठोस परिणामों को प्राप्त करने का तरीका है। अत: इसे कला की संज्ञा देना गलत नहीं है, क्योंकि—

(i) प्रबन्ध का उद्देश्य किसी उपक्रम में सार्थक परिणाम प्राप्त करना है।

(ii) प्रबन्ध की कुशलता में उसके दैनिक अनुभव और अभ्यास से वृद्धि होती है।

प्रबन्ध विज्ञान के रूप में—इसी तरह व्यावसायिक प्रबन्ध निश्चित सिद्धान्तों पर आधारित सुव्यवस्थित ज्ञान का भण्डार है। विद्वानों ने अपने अनुभव एवं ज्ञान के आधार पर समय-समय पर व्यवसाय सम्बन्धी अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है जो प्रबन्ध को विज्ञान की कोटि में रखने के लिए पर्याप्त है।

उपरोक्त अध्ययन करने के उपरान्त हम कह सकते हैं कि प्रबन्ध कला और विज्ञान दोनों है। वास्तव में इसके वैज्ञानिक एवं कलात्मक रूपों को अलग नहीं किया जा सकता। सैद्धान्तिक ज्ञान व्यावहारिक ज्ञान के बिना अधूरा है तथा व्यावहारिक ज्ञान के बिना सैद्धान्तिक ज्ञान का उपयोग नहीं हो सकता अर्थात् एक कुशल प्रबन्धक के लिए प्रबन्ध का ज्ञान और अनभव दोनों परमावश्यक है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2. प्रबन्ध एवं प्रशासन में अन्तर-भेद कीजिए।

उत्तर—

प्रबन्ध एवं प्रशासन में अन्तर
(Distinction between Administration and Management)

क्र. सं. (S. No.)	अन्तर का आधार (Basis of Difference)	प्रशासन (Administration)	प्रबन्ध (Management)
1.	**प्रभावित करने वाले घटक**	प्रशासन बाहरी घटकों (जैसे—सामूहिक, राजनैतिक अथवा जन-साधारण की शक्ति) से अधिक प्रभावित होता है।	प्रबन्ध मानव-शक्ति द्वारा अधिक प्रभावित होता है।
2.	**उद्देश्यों एवं नीतियों का निर्धारण**	प्रशासन का मुख्य कार्य संगठन की नीतियों एवं उद्देश्यों का निर्धारण करना होता है।	प्रबन्ध प्रशासन द्वारा निर्धारित उद्देश्यों एवं नीतियों को क्रियान्वित करता है।
3.	**स्वामी व सेवक का सम्बन्ध**	प्रशासन उद्योग का स्वामी होता है जो उसे आवश्यक पूँजी प्रदान करके उस पर प्रतिफल के रूप में लाभ प्राप्त करता है।	प्रबन्ध प्रशासन का सेवक होता है जो उसके (प्रशासन) आदेशानुसार कार्य करता है और अपनी सेवाओं के बदले में पारिश्रमिक अथवा लाभ का कुछ भाग प्राप्त करता है।
4.	**प्रबन्धकीय स्तर**	प्रशासन से आशय शीर्ष अथवा सर्वोच्च प्रबन्धकीय स्तर से है।	प्रबन्ध से आशय मध्यम एवं निम्न-स्तरीय प्रबन्धकीय स्तर से है।
5.	**निर्णयात्मक बनाम क्रियान्वयन सम्बन्धी कार्य**	प्रशासन एक निर्णयात्मक कार्य (Determinative Function) है।	प्रबन्ध एक क्रियान्वयन कार्य (Executive Function) है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4. एक प्रक्रिया के रूप में प्रबन्ध की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रबन्ध एक प्रक्रिया के रूप में (Management—as a process)—प्रबन्ध को कुछ विद्वानों ने विचारों, वस्तुओं एवं व्यक्तियों से सम्बन्धित बताया है (Management is concerned with ideas, things and people) अर्थात् प्रबन्ध वह प्रक्रिया है जो व्यक्तियों से कार्य कराकर विचारों को परिणामों से परिवर्तित करता है। विचारों से हमारा आशय व्यक्तियों की इच्छाओं, भावनाओं एवं इरादों से है जो कि व्यक्ति की बुद्धिमत्ता पर निर्भर करते हैं। वास्तव में यह एक सृजनशील एवं नव-प्रवर्तनशील प्रक्रिया है। वस्तुओं का अभिप्राय साधनों एवं कार्यों से है। क्रियाओं, प्रक्रियाओं, तकनीकों का निर्धारण करना ही वस्तुओं का प्रबन्ध कहा जाता है।

डाल्टन ई. मैक्फरलैण्ड के शब्दों में, "प्रबन्ध एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रबन्धक व्यवस्थित, समन्वित एवं सहकारी मानवीय प्रयासों के माध्यम से उद्देश्यपूर्ण संगठन बनाते हैं, निर्देशित करते हैं, बनाये रखते हैं तथा संचालित करते हैं।"

जार्ज आर. टैरी (George R. Terry) के अनुसार, "प्रबन्ध एक पृथक् प्रक्रिया है जिसमें नियोजन, संगठन, उत्प्रेरण एवं नियन्त्रण सम्मिलित है। इनमें से प्रत्येक में कला एवं विज्ञान दोनों का प्रयोग करते हुए पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस प्रक्रिया का अनुसरण किया जाता है।"

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2. वैज्ञानिक प्रबन्ध की परिभाषा दीजिए। किन्हीं तीन सिद्धांतों के बारे में बताइए।

उत्तर—वैज्ञानिक प्रबन्ध दो शब्दों के मेल से बना है—एक 'वैज्ञानिक' और दूसरा 'प्रबन्धन'। 'वैज्ञानिक' शब्द का अर्थ है विज्ञान-सम्बन्धी और 'प्रबन्ध' शब्द का अर्थ है अन्य व्यक्तियों से कार्य कराने की युक्ति। अत: वैज्ञानिक प्रबन्ध से आशय किसी कार्य को विशिष्ट ज्ञान सामग्री के आधार पर विभिन्न मानवीय प्रयासों द्वारा पूरा करना है। **एफ. डब्ल्यू. टेलर** के अनुसार " वैज्ञानिक प्रबन्ध यह जानने की कला है कि आप लोगों से यथार्थ में क्या कराना चाहते हैं तथा यह देखना चाहते हैं कि वे उसको सुन्दर तथा सस्ते ढंग से करें।"

पीटर एफ. ड्रकर के अनुसार, "वैज्ञानिक प्रबन्ध कार्य का संगठित अध्ययन है, कार्यों के सरलतम भागों का विश्लेषण है तथा कार्य के प्रत्येक भाग में कर्मचारियों के कार्य निष्पादन का विधिवत् सुधार है।"

वैज्ञानिक प्रबन्ध के तीन सिद्धान्त निम्नलिखित हैं :

(1) **विज्ञान, न कि अँगूठा राज्य** (Science, not Rule of Thumb)—इस सिद्धान्त के अनुसार वैज्ञानिक प्रबन्ध में प्रत्येक कार्य वैज्ञानिक एवं तर्कपूर्ण पद्धतियों के आधार पर किया जाता है और अँगूठा राज्य का बहिष्कार किया जाता है। इसके अन्तर्गत विद्यमान परम्परागत तथा रूढ़िवादी पद्धतियों का परीक्षण किया जाता है और यदि वे विज्ञान की कसौटी पर सही उतरती हैं तो उनका उपयोग किया जाता है अन्यथा उनको समाप्त करके उनके स्थान पर नवीन पद्धतियों को विकसित किया जाता है।

Scanned with CamScanner

(2) **संगति, न कि असंगति** (Harmony, not Discard)—वैज्ञानिक प्रबन्ध का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि इसके अन्तर्गत संस्था के विभिन्न स्तरों पर पाई जाने वाली असंगतियों अर्थात् मेल न खाने वाली या प्रतिकूल स्थितियों को समाप्त करके उन्हें अनुकूल बनाया जाता है। टेलर असंगतियों को दूर करने के प्रबल समर्थक थे।

(3) **सीमित उत्पादन के स्थान पर अधिकतम उत्पादन** (Maximum Output in Place of Restricted Output)—वैज्ञानिक प्रबन्ध का चौथा सिद्धान्त अधिकतम उत्पादन पर बल देता है। यह सीमित उत्पादन की विचारधारा का विरोधी है। उनके अनुसार जितना अधिक उत्पादन होगा उतना ही अधिक लाभ होगा। जितना अधिक लाभ होगा मालिकों एवं श्रमिकों दोनों को उतना ही अधिक लाभों में से हिस्सा मिलेगा। जब दोनों को भरपूर लाभ मिलेगा तो लाभ के वितरण सम्बन्धी विवाद स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4. प्रबन्ध के सिद्धान्तों के महत्व के किन्हीं चार बिन्दुओं को समझाइए।

उत्तर—प्रबन्ध के सिद्धान्तों के महत्व (Importance of Management Principles)—प्रबन्ध के सिद्धान्त प्रबन्धकों के लिए अति महत्वपूर्ण हैं। इन्हीं के आधार पर वे अपने प्रबन्धकीय कार्यों को करने की कोशिश करते हैं। वास्तव में, प्रबन्धक के लिए प्रबन्ध के सिद्धान्त अपरिहार्य साधन हैं। प्रबन्धक के सिद्धान्तों का महत्व निम्नलिखित कारणों से होता है—

(1) **कार्यकुशलता में वृद्धि** (Increases Efficiency)—**प्रो. कूण्ट्ज तथा ओ'डोनल** ने लिखा है, "प्रबन्ध के सिद्धान्तों से निश्चित ही प्रबन्धकीय कार्यकुशलता में सुधार होता है।" वास्तव में, जब प्रबन्ध को प्रबन्ध के सिद्धान्तों की जानकारी होती है तो वह अधिक अच्छी तरह से संस्था की समस्याओं का समाधान ढूँढ़ सकता है।

Scanned with CamScanner

(2) **संसाधनों का अधिकतम उपयोग एवं प्रभावी प्रशासन** (Maximum Utilisation of Resources and Effective Administration)—एक कम्पनी के मानवीय और भौतिक संसाधन सीमित होते हैं, इनका इस प्रकार से उपयोग किया जाना चाहिए ताकि उनसे कम से कम लागत पर अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके। प्रभावी प्रशासन के लिए प्रबन्धकीय व्यवहार का व्यक्तिकरण आवश्यक है जिससे कि प्रबन्धकीय अधिकारों का सुविधानुसार उपयोग किया जा सके।

(3) **प्रबन्धकीय शोध में रुचि** (Interest in Managerial Research)—प्रबन्धकीय शोध प्रबन्ध के सिद्धान्तों के विकास का कारण एवं परिणाम है। ज्यों-ज्यों शोध होगी त्यों-त्यों नए सिद्धान्तों का विकास होगा और जैसे-जैसे नये सिद्धान्त विकसित होंगे वैसे ही प्रबन्ध में शोध के नए कारण पैदा होंगे।

(4) **जटिल समस्याओं के समाधान में योगदान** (Help in Solving Complex Problems)—अनुभव तथा शोध से विकसित सिद्धान्त एक कम्पनी की जटिल से जटिल समस्याओं के समाधन में योगदान देते हैं। वे व्यवसाय के गतिशील वातावरण एवं उसके प्रभावों को समझने में योगदान देते हैं।

Scanned with CamScanner